
Printed at Shri " Satyavijaya P. Press "

Amritsar by Sankalchand Harilal Shah.

॥ प्रस्तावना ॥

गाथा-नाणस्तु सव्वत्त पणासणाय ।

अन्नाण मोहस्तु विवज्जणाय ॥

रागस्तु दोत्तस्तु य संत्तणाय ।

एगंत तोत्तुं समुवेश मोत्तुं ॥

श्री उत्तराख्यपन.सं.सं.

ज्ञान सर्व स्थानमें प्रकाशका करने वाला है, अज्ञान और मोहरूप अन्धकारका नाश करने वाला है, रागद्वेषरूप रोगका विध्वंस करने वाला है, और एकांत अमिश्र अनुपम मोक्ष सुखका दाता है.

इमलिये सुखेच्छु प्राणियोंको अभिनव ज्ञानका पठन मनन और निश्चयासन करनेकी बहुत ही आवश्यकता है. प्राचीन कालमें केवल-ज्ञानी तथा महा प्रज्ञा (बुद्धि) वंत सत्पुरुषों अनेक

दिको पढ़ना, श्रवण करना और दूसरोंको पढ़ाना, यह उत्तम जनोंका कर्त्तव्य है. इसलिये चंद स्तवन वेगेरा जोकि कविवर मुनि श्री हीरालालजी महाराजके बनाये हुवेथे, उनको संग्रह कर शुद्ध करके भव्य जीवोंके हितार्थ पठन करने योग्य जाण प्रथम ' श्री जैन सुवोध हीरावली ' नामक ग्रंथकी १००० प्रति छपवाकर श्री संघको अमूल्य अर्पण कीथी, जोकि सर्व प्रिय होनेसे थोड़ीही दिनोंमें सब वितर्ण (खर्च) हो गई.

उसी अपेक्षासे यह ' श्री जैन सुवोध रत्नावली ' नामक ग्रंथ कविवर मुनि श्री हीरालालजी महाराज रचितको शुद्ध करके १००० प्रति श्री संघकी सेवामें भेंट करके कृतार्थ होते हैं.

चार कमान
मु. हैद्राबाद (दक्षिण)
कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा

श्री संघके सेवक.

पन्नालाल जमनालाल
रामलाल किमती.

चन्द्रजीको प्रबल असरकारक हुवा, और तूर्त पत्नी पुत्र परिवारकी आज्ञा संपादन कर संवत् १९१४ के ज्येष्ठ शुक्ल पंचमीको अपने साले देवी-लालजीके साथ दिक्षा अंगिकार की. गुरुभक्ति कर ज्ञानके प्रेमी बने, और शांत दांत क्षांत शुद्धाचारी होकर जिनशासनको प्रदत्त करने लगे. ग्रामानुग्राम उग्र विहार करते हुवे संसारी कुटुम्ब उद्धारार्थ, संवत् १९२० में पुनः कंजरहा ग्राममें पधारे और सदुपदेशसे पत्नी और तीनही पुत्रों को वैरागी बनाये. प्रथम राजावाईने आज्ञा देतीनों पुत्रोंको सहर्ष दिक्षा दिलाई, और फिर आपने भी महासतीजी श्री रंगूजीके पास दिक्षा धारण की. फिर ये सब गुरु और गुरुर्णीजीकी भक्ति करने हुवे यथाशक्ति ज्ञान संपादन करते हुवे विशुद्ध तपसंयमसे अपनी आत्मा

श्री जैन सुबोध रत्नावलीकी अनुक्रमणिका.

वैषयांक. विषय.	पृष्ठांक.	भागपदी वर्णनांक
प्रस्तावना.	३	स्तवन. १४
ग्रंथकर्ताका संक्षेप		८ श्री जिनवाणी स्त-
जीवन चरित्र.	६	वन-चमत्त होली. १५
१ मंगला धरणम्-आरती.?		९ श्री महावीरस्वामीका
२ श्री नानाभाषजीकी		मंगलस्तवन-लावणी. १६
लावणी.	३	१० श्रीवीर प्रभुंक दर्श-
३ श्री महावीरस्वामी-		नका उत्साह-स्तवन १७
का स्तवन-महाद.	५	११ श्रीनववशमंत्र स्तवन. १९
४ श्री नैमीनाथजीका		१२ गुरुगुण स्तवन-महाद. २१
स्तवन.	७	१३ श्री जिनराजमे वि-
५ श्री नैमीनाथजीका		नर्ती स्तवन-गमष्ट
स्तवन.	१०	कच्चाली. २३
६ श्री महावीर स्वामी-		१४ श्री जिनवाणी स्तवन. २५
का स्तवन.	१०	१५ माधु गुण स्तवन-
७ श्री ऋषभदेवजी के		चमत्त होली १७

- ४३ पद-शिक्षाकितेलेग? ७३
 ४४ विनयका पद. ७५
 ४५ पद-चैतन्य प्रदेशीका. ७९
 ४६ पद-आत्म ध्यान. ८०
 ४७ पद-समता गुणदर्शक. ८१
 ४८ पद-निंदा दुर्गुण. ८२
 ४९ पद-कलियुग दर्शक-
 होली. ८४
 ५० पद-जरा गुण दर्शक. ८५
 ५१ पद-मनको सद्वोध. ८६
 ५२ पद-अभिमानी के
 लक्षण-महाड. ८८
 ५३ महमदी फरमान-
 गजल कव्वाली, ८९
 ५४ पद-अनित्यता
 दर्शक-टुमरी. ९१
 ५५ जक्त जालं दर्शक. ९२
 ५६ पद-धारी नहीं होवे ९२
 ५७ उपदेशी लावणी. ९३
 ५८ लावणी उपदेशी. ९५
 ५९ पद-बहु मे अर्जी. ९७
 ६० लावणी त्रया चरित्र ९८
- ॥ चरित्रावली ॥
 ६१ भरत बाहुबल चरित्र
 लावणी. १००
 ६२ लावणी-बाहुबल-
 जीको ब्राह्मी सुदरी
 जीका सद्वोध. १०३
 ॥ हरिवंश चरित्रावली ॥
 ६३ कृष्णलीला. १०६
 ६४ जीव जसाका एवता
 ऋषिसे सवाल. १०९
 ६५ एवता ऋषिका जीव
 जसासे जवाब. ११०
 ६६ जीव जसा और कंश
 राजाका विचार. १११
 ६७ छे भाइ साधूका
 वर्णन-लावणी. ११३
 ६८ पद-श्रीपदीका सत्य. ११७
 ६९ पद-कृष्णविलाप. ११९
 । गम चरित्र ॥
 ७० मीना हरण-जटाड
 अंझार १२१
 ७१ मीनानीमे भवि-

घणणण घणणण घणकारं ॥ जय ॥ ५ ॥
 गज रथ तुरंगा सजी सुरंगा;
 अति उमंगा भोपालं ॥ प्र० अति० ॥
 सन्मुख आवे, शीस नमावे;
 गुण गावे अति उज्जालं ॥ जय ॥ ६ ॥
 सदा सुरंगं, उडुपति खंगं,
 जीते जंगं वरदानी ॥ प्रभू० जीते० ॥
 वपु ' हीरालालं, ' करो प्रतिपालं,
 दयालं मम हित आनी ॥ जय ॥ ७ ॥

॥ श्री शांतीनाथजीकी लावणी ॥

श्री शांतीनाथ महाराज अर्ज सुणो मेरी ।
 तुम शांती करण जिनगज सगण आयो तेरी ॥ आं० ॥
 यह स्वार्थ मिळ विमाण मे चक्कर आया ।
 दर्म्मानापुर नगमें जन्म लियो जिनगया ।



सुत्रकी वाणी सुणकर जोर लगाया ।

करी पचरंगी प्रमुख तपस्या भाया ।

कहे 'हीरालाल' दया धर्म मोक्षकी सेरी ॥ तुम ॥ २ ॥

॥ श्री महावीर श्वामीका स्तवन ॥ महाड राग ॥

सुरांगना गावे मङ्गलाचार, दैवांगना गावे

मङ्गलाचार ॥ आं ॥

उर्ध्व अधोगति धकीरे । तिर्थकर पद पाय ॥

जननी स्वप्ना देखिया कांइ । दिग वेण दोनों

मिलाय ॥ सु ॥ १ ॥

छप्पन कुंवारी सब सिणगारी । गावे मिल २ गीत ॥

रति करे आप आपणी कांइ । पूर्ण प्रभकी

प्रीति ॥ सु ॥ २ ॥

इन्द्र इन्द्राणी आवियारे । नर नार्याका वृंद ॥

जन्म भवने जिनराजको । और जननी को-

नमत आनन्द ॥ सु ॥ ३ ॥

॥ श्रीनेमी नाथजीका स्तवन ॥ नागजीकी दर्शमें ॥

नेमजी, यादव वंशमें ऊपनाहो प्रभू ।

सूर्य सरीखा दीपता हो नेमजी ॥ १ ॥

नेमजी, समुद्रविजय राजा भलाजी कांड ।

शिवादेवी सुत मलपता हो नेमजी ॥ २ ॥

नेमजी, रमतडी रमता धकाजी प्रभू ।

आयुद्ध शाय्यामें आविया हो नेमजी ॥ ३ ॥

नेमजी, धनुष्य चढाइ शंख पूरियो प्रभू ।

श्रीपत सुण घवराविया हो नेमजी ॥ ४ ॥

नेमजी, अतुल्य बली अवलोकने कहे

हरीने हर्ष आयो घणो हो नेमजी ॥ ५ ॥

नेमजी, उग्रसेनकी डीकरीजी कहे

राजुलरूप सुहामणो हो नेमजी ॥ ६ ॥

नेमजी, व्याव रूयो रंग अलंकारी ॥ ७ ॥

- नेमजी, सङ्ग नहीं छोटां तुमतणो प्रभू ।
 नाथ हमारा हिवडे बसोहो नेमजी ॥ १५ ॥
 नेमजी, संयम लेइ गिरीवर चटी राजुल ।
 सातसो परिवारस्युं हो नेमजी ॥ १६ ॥
 नेमजी, वर्षा दृइ चीर भीजियाजी कांइ ।
 गिरी गुफामें आविया हो नेमजी ॥ १७ ॥
 नेमजी, वस्त्र सुखावा अलगा कियाजी कांइ ।
 दामनी जिम चमकाविया हो नेमजी ॥ १८ ॥
 नेमजी, रहनेमी चित डोलियोजी कांइ ।
 देवरने समझाविया हो नेमजी ॥ १९ ॥
 नेमजी, केवल लेइ मुक्ते गयाजी कांइ ।
 'हीरालाल' गुण गाविया हो नेमजी ॥ २० ॥
 नेमजी, उन्नीमो पेंसट विपेजी कांइ ।
 गट चितोइ सुख पाविया हो नेमजी ॥ २१ ॥

मिथ्यात्वी माने नहींजी ॥ महाराज ॥

वल जोवा जिनराज ।

स्वर्गसे आया वहीजी ॥ महाराज ॥ ४ ॥

लिया नेम कुंवार ।

आकाशमें चालियाजी ॥ महाराज ॥

प्रभू जोयो अवधि ज्ञान ।

वैरीने पाछा वालियाजी ॥ महाराज ॥ ५ ॥

दान्या अंगुठाका हेठ ।

अमर अति आरडेजी ॥ महाराज ॥

सुरपति आया दौड ।

छोड पांवा पडेजी ॥ महाराज ॥ ६ ॥

जोयो वलि जिनराज ।

आज सुरासुर मिलीजी ॥ महाराज ॥

पाछा पालणिये पोढाय ।

आया अमगपुरीजी. ॥ महाराज ॥ ७ ॥

जन्म लियो प्रभू सत्र सुख पावे ॥ श्री ॥ १ ॥

कंचन वरण शरीर विराजे ।

केहर लंछन चरण कहवावे ॥

दीसे देही सप्त हस्त प्रमाणे ।

दिनकर तेज जिम दीपावे ॥ श्री ॥ २ ॥

रत्न सिंहासण उपर विराजे ।

छाजे छत्र चमर डुलावे ॥

मनमोहन भामंडल भासत ।

चतुरानन प्रभू दर्श दिखावे ॥ श्री ॥ ३ ॥

नरतिर्यच सुरासुर केइ ।

कोडाकोडी गिणती न आवे ॥

प्रभूसुख जोवे तृप्त न होवे ।

हर्ष २ हियो उमंगावे ॥ श्री ॥ ४ ॥

चरम जिनेश्वर चर्ण युगलको ।

नमतां नवानिध पाप पलावे ॥

घन जिम गाजे अन्वर राजे ।

प्रभूसुख वाणी रही छवि छाड़ ॥ आ ॥ ३ ॥

प्रथम जिनेश्वर आनन्दकारी ।

मङ्गल वरते सब दिन ताड़ ॥

कहे ' हीरालाल ' आप विराजा ।

माताने मुक्तीमे दिया पहुँचाड़ ॥ आ ॥ ४ ॥

॥ श्री जिनवाणी स्तवन । राग—वसंत—होली ॥

चली आती है, हाँरे चली आती है ।

वाणी जिनवर गंङ्गा ॥ आं. ॥

प्रभू मुखसागर बहे अति निर्मळ ।

गणधर गुणग्रह ऊमङ्गा ॥ च ॥ १ ॥

द्वादश अङ्गी चङ्गी सरिता ।

वितर्क अनेक भर्या नगङ्गा ॥ च ॥ २ ॥

या जिन वाणी दुःख दाह मिटाणी ।

अर्ज करुं जिनराज आपसे । तुम रक्षाके करनेवाले॥
 सेवे सुरिंदा तेज दिणंदा । दीपे जिणंदा प्रतिपाले॥
 अक्षय पुण्य कमाया दमकती काया॥ कंचन वरणं-
 देह धरणं ॥ जय ॥ ३ ॥

रवि चन्द्रमा सभी जोतपी । भरा ग्हे समुद्र पानी ॥
 भूमण्डलअचलजिममेरुतबलगरहोयह जिनवाणी॥
 सदा रहोगुलजार गिरामी॥ भवस्पातकके हरणं॥ जय४
 सदा देव गुरु धर्म आपकी॥ वनी रहो यह गुल कदारी॥
 श्री रत्नचन्दजी महाराज राजके । जवाहरलालजी-
 यशधारी ॥

संवत् उन्नीसो पैंसठ वर्षे । हीरालाल कहे तारण-
 तिरणं ॥ जय ॥ ५ ॥

॥ स्वप्न श्रीवीर प्रभूके दर्शनका उत्साह ॥
 ॥ हरी आजो मंदगिये गंग मानवाने ॥ यह देशी ॥
 आला आलागे दर्शन बाहला वीरनारे ॥ ३ ॥

॥ नवकारमंत्र स्तवन॥रावणको समझावे गणीदे०

करो नवकार मंत्रका जाप ।

कटत है जन्म २ का पाप ॥ आं० ॥

सबही शान्त्रके दग्म्यान ।

किया नवकारमंत्र व्र्यान ॥

समझलो यही ज्ञान और ध्यान ।

भजन बिन नर है पशू समान ॥

दोहा—पंचपद परमेश्वरे । वर्ण पैंतीस प्रमाण ॥

अर्हत सिद्ध आचार्य उपाध्याय । साध-

वतावे ज्ञान ॥

नि०—रखो सब दिल अपना तुम साध ॥ कटत ॥१॥

अमी होवे जल समान ।

भूत नहीं लागे जहां स्थान ॥

गममें बचावे अपने प्राण ।

जह्म में होवे अमृत प्राण ॥

अहो विरादर तुम क्यों भूले । क्यों करते हो वेद ॥
 मिलत-समजलो इसेहीमां और बाप ॥ कटन हो ॥ ४ ॥
 चले नहीं कोई किया तो फाना टले सब ग्रह गौचर्म शान ॥
 सब ही विद्या मंत्र दत्तदान । करो नवकार मंत्र की लान ॥
 दोहा-योही मंत्र त्रिकाल संध्या ॥ होत मनार्थ सिद्ध ॥
 हीरालाल नवकार मंत्र से । पावांगा बहु रिद्धि ॥
 मिलत-सुणायां ज्ञान गुरुजी आप ॥ कटन हो ॥ ५ ॥

गण स्तवन ॥ राग-महाड ॥

री ।

ज ॥ आं० ॥

या ।

पाकर ।

॥ हो गुरु ॥

क्यों होवो जाण अजाण ॥ हो गुरु ॥ ५ ॥

जेनमार्ग दीपक ज्यों देखायो ।

यो मोटो उपकार ॥

हीरालाल नन्दलालको तार्या ।

यो मोटो उपकार ॥ हो गुरु ॥ ६ ॥

॥ श्री जिनराजसे विनंती स्तवन ॥

॥ गजल-कच्वाली ॥

बिना जिनराजकी भर्त्ता । कभी नहीं मोक्ष पावेगा ॥

दयालू दीनके बन्धव । वही जो प्राण बचावेगा ॥ जां ।

जिनन्दकी सूरती प्यारी । खुली गुलशनकी क्यारी ॥

प्रीति यह लगी है हमारी । प्रभुसे लग्न लगावेगा ॥

बिना ॥ १ ॥

तुमारे कष्टकी छांया । गण्डमें जायके जाया

दुःख्या दुःख मिश्रवो । जभी आनन्द आवेगा ॥

॥ विना ॥ ७

॥ श्रीजिनवाणी स्तवन ॥ अणी भोलुने कण -
भरमावियो ॥ यह देवी ।

देवी जिनन्द वाणी सुख वामणीरे ।

मनेषांलित पूरे हान ॥ देवी० ॥ आ० ॥

अणी देवीनी दर्शन दोहिलोरे ।

पुर्व साधिन होवे पुण्य ॥ देवी ॥ १ ॥

देवी नरे नृपण कर सोहतीरे ।

जिम पावे सूर्य मर्यादा ॥ देवी ॥ २ ॥

देवीनि नखक सुगाद दिवेवनेरे ।

जोरे पदार्थ गज नवनगर ॥ देवी ॥ ३ ॥

देवी हाथे म्हा निपो जानवोरे ।

वसु देव ॥ ४ ॥ विमान ॥ देवी ॥ ५ ॥

॥ साधू गुण स्तवन ॥ राग-वसंत-होरी ॥

साधु आयारे भविक जीव तारनको ।

गुरु आयारे भ० ॥ आं० ॥

ज्ञान सुनावे धर्म बतावे ।

क्रोध लोभ परिहारनको ॥ साधु ॥ १ ॥

जन्म मरणका जो फंद मिटावे ।

दुर्गति दूर निवारणको ॥ साधु ॥ २ ॥

पट कायाका जो प्राण बचावे ।

रागद्वेष दोह हाग्नको ॥ साधु ॥ ३ ॥

पंच इन्द्रियोंको दमन करावे ।

मान अहंकार मद गारनको ॥ साधु ॥ ४ ॥

करी तन तपस्या जोर लगावे ।

अष्ट कर्मगिणु मार्गनको ॥ साधु ॥ ५ ॥

स्वर्ग गनिका जो सुख मिलावे ।

दयामार्ग दिल धाग्नको ॥ साधु ॥ ६ ॥

एहने अंब जाणीने जल मीचियों ।

मोथो धवाधी जाण्यो कडवो नामदों ॥ज्ञा॥५॥

एहने दूध मरीखो जाण्यो उजल्यो ।

पाथो जेवधी जाण्यो जिम कागल्यो ॥ज्ञा॥६॥

जाण्यो हंस मरीखी गर्ता चाल्यो ।

ध्यान धग्वधी जाण्यो जेहवो बगल्यो ॥ज्ञा॥७॥

सुसुहु जाणीने शिष्य मुंडावियों ।

हीरालाल को ते हिवडा देगल्यो ॥ज्ञा॥८॥

॥ विहार करते सुनीयजसे विनंती स्तवन ॥

॥ चेतन चेतोरे ॥ यह देशी ॥

वेगा आजोजीर महायज सुनीक्षर ।

दग्धन दीजोनी ॥ देगा ॥ ज्यो ॥

विहार करेना बारन्या लगो ।

हम देगी दीजोनी ॥

लुल २ पांय पटीजोजी ॥

दरशन धारा लागे प्याग ।

भोग जोग मिलीजोजी ॥ वेगा ॥ ५ ॥

हीरालाल कहे गुरु दर्शनका ।

हरदम ध्यान धरीजोजी ॥

मन बच पाया भक्त रचाया ।

संसार नगीजोजी ॥ वेगा ॥ ६ ॥

—

॥ श्री जिनबाणी सुननेका उन्मुखता ॥

॥ वेदक सिग्राहो ॥ यह दर्शी ॥

जय जिनबाणी बोध जनार्ती ।

गुणगुण जनन बदाणी ॥

जय २ हो जिनबाणी ॥ ज्ञांया ॥ १ ॥

अपवादिक जिन बह बोधीनी ।

नह विरोधे नहि विरोधे ॥ जय ॥ २ ॥

गहाग मनका मनोरथ पूगेरे ॥ जय ॥ १० ॥
 धे मुज साहिव अंतरजामी ।
 आसा पूरो भरो यह हामीरे ॥ जय ॥ ११ ॥
 हमारे उमायो जन्मको लायो ।
 गायो जिनजीको रंग बधावोर ॥ जय ॥ १२ ॥
 जीयागंजमन्दसोर पैसट बर्ये ।
 गुज गायो हीगलाल हरे रे ॥ जय ॥ १३ ॥

॥ श्री जिनगजसे विनती मन्दन ॥

॥ तीजहरी नेर निदार्गिषे । यह देखी ॥

आन सुख वददल । इतनी बड़े सुन्दरी बैसही ॥

.....

.....

.....

ज्याने जाया हो हुवो जन्म प्रमाणके॥ आ. ॥७॥
 यशःकीर्ती जगमें घणी॥सबसिंघकोहोविघ्नगयोदूरके॥
 आनन्द वरते अति घणो ।
 हिवे पामो हो कृद्धि भरपूरके ॥ आ. ॥ ८ ॥
 संवतउनीससोपेंसटोमाघमासेहोशुभतिथिरविवारके॥
 पद पेंसट पूरण हुवा ।
 हीरालालज हो पामे हर्ष अपारके ॥ आ. ॥ ९ ॥

॥ ईश्वरसे प्रार्थना ॥ राग—कव्वाली ॥
 सज्जन तुम मोक्ष पावोगे। हमे भी यादतो करना ॥
 रहमदिलहमपर लावोगे।तुमारेकझोंकामरना॥ आं. ॥
 एक मालिक हे तुंही। और न देव हे कोई ॥
 आगम हमकोभी आवेगा ।
 तुम्हारे कझोंका मरणा सज्जन. ॥ ॥ १ ॥
 बन्धीके बन्धको छोड़ो । कमोके रुन्दको चोड़ो ॥

वहासे बारह जोजन ऊंची । सिद्ध सिलापर मुक्ती-
पाना है ॥

सुख अनंता सिद्ध भगवंतका । जन्म मरण दुःख-
मिटाना है ॥

जवाहर लालजी गुरु प्रसादे। हीरालाल सुख पाते-
हैं ॥ चउदे ॥ ४ ॥

॥ श्री गुरुउपकार लावणी ॥

वंदगी करो गुरुकी गुनवान । जिनोका है सिरपर-
अहसान ॥ आं. ॥

अगर जो दिया है संयम भार । उनोका है मोटा-
उपकार ॥

होवे जो ज्ञानतणा दातार । गुणोंका गुण भूले-
जो गंवार ॥

मिलत-उन्होंको कोई नहीं छीते जहान ॥ बंदगी ॥ १ ॥
 सिखाया सुत्र अर्थ और पाठ । बनाव मोन जा-
 नेकी बाट ॥

उन्होसे रखेजो दिलमें आंटाकपटकी भंग गांठमें गांठ
 दोहा-भोगा होवे कोई कामका । अग्र लहे तुस्त ॥
 पटेल बेल गलियार गधा जिम । चले न-
 सीधा पंथ ॥

मिलत-इतमत सहैत है अजान ॥ बंदगी ॥ २ ॥
 जुगत करे मोक्षमें दाताकभी नहीं होय मोक्षके पात
 उमके कर्मसे उमका नाश । फल जिम लगे जं-
 गलमें बांन ॥

दोहा-रूप हुन्डको त्यागकर । खर निश मार ॥
 लड़े कानके शान क्यों । शागमें बतलाप ॥

मिलत-निले क्या नान जोर सम्मान ॥ बंदगी ॥ ३ ॥
 लपनी रेलीपउके मनानबंदगी क्यों पकड़ दो कान



इम समझाइ संयम लीधो ।

ते तो जन्म कृतार्थ कीधोरे ॥ सुणो २ प्रे० ॥१२॥

कहे हीरालाल जो होवे वैरागी ।

जाने मोक्षतणी लवलागीरे ॥ सुणो २ प्रे० ॥१३॥

॥ वैरागीसे स्त्रीकी विनती ॥ हो पिउ पंवीछा-दे०

अहो सुणो बाहालाजी, ये लेवो संयम भाग्यो ।

माताने किम भेलो झुगती लोयणांग्लो ॥

अहोमु० वो नार्याको संयोगजो ।

सुखडो तो ज्ञावे बाने वयणम्युंग्लो ॥ १ ॥

अहोमु० कांड मन् या ४३ विग्यामजो

प्रीतमनी या वाटज ज्ञावे प्रेमदांग्लो ॥

अहोमु० किम नजो अदर्वाचजो ।

ज्ञावे ते किम आवे चडी पक प्रेमदांग्लो ॥

अहोमु० निन्य उद रम्य दामजो ।

लाधा ने अणलाधा समता राखियेरेलो ॥
 अहोसु० कोइ बोले कडवा बोलजो ।
 आगो ने वली पाछो नहीं झाकियेरेलो ॥ ३ ॥
 अहोसु० कांइ करणो उग्र विहारजो ।
 उष्ण परिसह शीतज सहवो दोहिलेरेलो ॥
 अहोसु० रहवो गुरुकुल वासजो ।
 विनयने वली भक्ती नहीं छे सोहलीरेलो ॥ ४ ॥
 अहोसु० राते किम आवे नींदजो ।
 सेजाने संधारो कर किम सोहवोरेलो ॥
 अहोसु० घडी जावे ज्यों पट मासजो ।
 आवेरे वीमासण हिवडे जोहवोरेलो ॥ ५ ॥
 अहोसु० संयमनो किस्थो जोगजो ।
 भोगोरे मन गमता भोग सुहामणारेलो ॥
 अहोसु० जो जाणता एहवो संजोगजो ।
 तारे तो किम कीधा व्याव वधामणारेलो ॥ ६ ॥

५०० । १००० । १०००० । १००००० ।

10-11-12-13-14-15-16-17-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000-1001-1002-1003-1004-1005-1006-1007-1008-1009-1010-1011-1012-1013-1014-1015-1016-1017-1018-1019-1020-1021-1022-1023-1024-1025-1026-1027-1028-1029-1030-1031-1032-1033-1034-1035-1036-1037-1038-1039-1040-1041-1042-1043-1044

1940

47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045 1046 1047 1048 1049 1050 1051 1052 1053 1054 1055 1056 1057 1058 1059 1060 1061 1062 1063 1064 1065 1066

[illegible]

.. * * * * *

॥ गङ्गा नद ॥ अति

• ३१७ शुद्धसर्गः॥

4. 14 714 172211

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. 1947-1948

SECRET

107

॥ २४ ॥

मिलत-डोलने मायामें ज्यों बग भीन ॥ पण्डित ॥१॥
 चंद से ज चलने के दग्ग्यान । गुजरी वक्तव्य बर-वान ॥
 करो गुण अवगुणकी पहिचान । घमन्ड क्यों गवने-
 हो इन्मान ॥

दोहा-क्यों जनेहो वंगनको । सविर बडाहें दुःख ॥
 अन्ये हो क्यों गिने कृपमें । जो दग्गिया का पू ॥
 मिलत-क्यों तुम कर्नेहो गमगान ॥ पण्डित ॥२॥
 ताभका पन्थ कठिण आचार । खोजा क्या उदावे-
 नरवार ॥

नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये

नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये

नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये

नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये

नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये

नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये नंदन के लिये

॥ पद तृष्णाकी फांस ॥ राग-धन्याश्री ॥

अरे हो तृष्णा मोह लियो संसार ॥ बाल बुद्ध
योवन बाला ॥

न कोइ पाया पार ॥ अरे हो तृष्णा ॥ आंकड़ी ॥
राज करंता राजा मोह्या । पट खन्डके सरदार ॥
अकस्मात बात नही भेले । न तजे टेक लगार ॥
॥ अरे हो ॥ १ ॥

कामणगारी है तृ नारी । बश कीधा भरतार ॥
कर २ प्रीती ब्रत न हूइ । सदा नखणी संसार ॥
॥ अरे हो ॥ २ ॥

तृष्णा तरंगनीहें अति गहनी । इन्द्रादिक दीना डार ॥
पार लहेपुल्लोत्तमकोइ । कठिनअमिकी खान्द ॥ अरे ३
तृष्णाबन्दी नव जग फेर्ली । फल लागे स्वग धार ॥
खानेबाला बामन हीना । उनको डाले माग ॥ अगे ४ ॥
त्याग तृष्णा संयम पाले । छोड़ धन भर्या भन्दार ॥

ज्ञान दीपक जोया घटअन्दर । दूर किया अन्धार ॥
 विकटघाटसे पार उतारण । किया घणा उपकार ॥ अब ४
 हीरालाल भजमाल नामकी । जो कोइ होवे होंशियार ॥
 रागधन्ना श्रीधुन्नलगाइ । सुणतां हर्ष अपार ॥ अब ५ ॥

॥ पद—सद्गुरु बौध ॥ गाफल मतरहै—यह देशी ॥
 गुरुजी ऐसा ज्ञान सुनावे रे ।
 अन्धेको मार्ग दिखलावे ॥ ढेर ॥
 भवसागर से पार उतारे ।
 काम क्रोध की लेहर निवारे ॥
 खोटी द्रष्टि किसी पर नारे ।
 अपनी जान ज्युं जान बचावे ॥ गुरुजी ॥ १ ॥
 जिसको संगत है मुनिवर की ।
 उमकी नाव भव जलमे निगेगी ॥
 विकट घाटमे पाए उनेंगी ।

कहोगे हमको नहीं किया पहिला ।
 मुरिदों को अकल फिर आवे ॥ गुरुजी ॥६॥
 अगर तुमारी है होंशियारी ।
 भक्ती करो गुणवंतो की भारी ॥
 हीरालाल कहे ये अकल हमारी ।
 आलीजासे आलीजा पद पावे ॥ गुरुजी ॥७॥

॥ पद—सच्चा मित्र ॥ गजल—कवाली ॥

मित्रका भरोसा भारी । वोही जो काम आते हैं ॥
 मुनासिबसमजके दिलको । जानमे जान लगाते हैं ॥ मि१
 होवे कोई वचनका मूरा । उनोका भागहै पूरा ॥
 हजारों कोस भी जावे । वहां भी काम आते हैं ॥ मि२
 मित्र वो दुःख मिटावे । सज्जन पन करके बतलावे ॥
 कृष्णधानकी खन्ड गये । त्रेपती लेकर आते हैं ॥ मि३
 भाइ लक्ष्मण के काग्य । भग्न उसी वक्त में आया ॥

(७९)

विमल्या दस्त लगाया । शक्ती गाउ भिटाने हैं॥मि४
 अगर दिल माफ है जिनका । प्रेम मे रहे मन उनका ॥
 शेर मे होवे मित्र लाग । कपट मे गुंज जाये हैं॥मि५
 हमारा काज सुधारो । विगदर पार उतारो ॥
 हीमालय मित्रतायेही । मोक्ष के सुमनदाने हैं॥मि६



॥ पद-मदबोध ॥ ग्रासेमन गल्यो गज गल्यो
 यह देखी ॥

अजब गि लागो जी लागो । नजियो जगन का
 बन्धो आगा ॥ १ ॥

कर्मो नही यहाँ कांड वातकी । जो नजियो से
 मांगा ॥ २ ॥

अनुरोध जगना हम हमार । जेना गीत ॥ ३ ॥
 क्यों नही न बलन्त सन्दन ॥ ४ ॥

दयाधर्म रूचे नहीं तुजको । बोल नजाने वागो
 वणज किया वैपारीतुमको । क्याफलहाथ लागो॥अ३
 आवागमनका चरखाढोले । जैसेभाडाकोतांगो
 क्योंसोतेहोअपनी नींदमे। अवतां सजन जागो॥अ४
 गुजरगइ वापिसनहींआती । जैसे सुरंगनीरागो
 जोखुदआपहीफिरे उघाडा।गोया उसकोनागो॥अ५
 क्या बक्सीसकरेगातुमको । कसुमल केसरीवागो
 धर्म तरबूत के उपर बैठे । पकड़े चारों पागो ॥ अ६
 तप जप खरची बान्धी पड़े । पाप अष्टादश त्यागो॥
 हीरालालको जन्म सुधार्यो । श्रीामीजीवडभागो॥अ७



॥ पद-शिक्षा किसे लगे ॥ देशी वरोक्त ॥
 अकल विन, नहीं लागे २ । सत्गुरु सीख शुद्ध-
 ज्ञान । पुण्य विन० ॥ अकल ॥
 आनिश होवे तो तेजी जागे । भस्मीकोक्या धागे॥

॥ विनयका पद आऊखो दृष्टाने सांन्धो को
नहीरे ॥ यह देशी ॥

विनय करी जे गुरुदेवकोरे । अहोनिशचरण के मायेगे ॥
ज्ञान दर्शन बली तपतणोरे । चाग्निनिर्मलधायगे ॥ वि१
संजोग छोडी दो प्रकार करे । मातपिता ने घर नारंगे ॥
अभ्यंतर विषय कषायकोरे । त्यागी जो होवे अणगारंगे
॥ विनय ॥ २ ॥

विनय आराधे आचार्य कोरे । होवे अंगवेष्टा हो जाणंगे ॥
बल्लभ लागे गुरुदेवकोरे । जाणे ज्यों जीवन प्राणंगे
॥ विनय ॥ ३ ॥

मुख अरि बचन प्रकाशतेरे । दुष्ट आचार अयोगरे ॥
सङ्घा कानका श्वान सारखेरे । निर्वृष्ट नमस्तबलोगरे
॥ विनय ॥ ४ ॥

भाजन भक्त्यो छोडे कणतणोरे । शूररनिष्ठ जहायेरे ॥
उच्च आचार जां विनय नजोगे । मृद्धीने नीच नीचो
जाये ॥ विनय ॥ ५ ॥

इम अनेक ओपमा करीरे । बहु सुत्री बहु गुणवानरे ॥
तारे निजपर आत्मारो । कहां लग कीजे बगवानरे

॥ विनय ॥ ११ ॥

गर्गाचार्यकेशिप्यपांचसोरो । मित्याकृपात्रहेशीआयेगे ॥
गलियार गछा बैल सारीखांगे । काम भोलायां नट
जाये ॥ विनय ॥ १२ ॥

आचार्य मनमांही चितव्योरे । छेडयो अवनिनां-
को संगरे ॥

तप जप करणी कीधी निर्मळीरे । दिन २ चढना गंगे
॥ विनय ॥ १३ ॥

करेआशातना गुरुदेवकीरे । बोले जो अवगुण वादेरे ॥
आहितकारी होवे तेहनेरे । ज्यों सर्प छेड्या विषवादेरे
॥ विनय ॥ १४ ॥

धर्मवृत्त मूल विनय छेगे । मीच्या स्युं वधे परिवारे ॥
पान फल शाखा नीपजेगे । पामे मोक्ष सुखश्रेयकारे
॥ विनय ॥ १५ ॥

संवत उनीसो सठ सठे । कार्तिक मास शुभ वारं ॥
 जवाहरलालजी गुरु निर्मळो । हांगल्याल कहे
 सुविचारं ॥ विनय ॥ २१ ॥

॥ पद—वैतन्य प्रदेशी सा ॥ अलंग राजा की देशी ॥
 प्रदेशी राजाजी, धारी काया नगरी नारी हो ।
 जामे हंस गजा रहे गरी हो प्रदेशी राजाजी ॥१॥
 प्रदेशी राजाजी, धारी नगरीका द्वार जो खुला हो ।
 आवे तस्कर कर २ हला हो प्रदेशी राजाजी ॥२॥
 प्रदेशी राजाजी, धन माल भरी भंडारी हो ।
 करे चोर तेहनी नित्य हारे हो प्रदेशी राजाजी ॥३॥
 प्रदेशी राजाजी, दग लगा धारी लागे हो ।
 विश्वान कियों विप्र लागे हो प्रदेशी राजाजी ॥४॥
 प्रदेशी राजाजी, नगरीमे धूम मचाइ हो
 सहाय केगा कौन आइ हो प्रदेशी राजाजी ॥५॥

सात धातूको पिंजर बनियो ।

क्या र्थे काया सिणगारीरे ॥ आत्म ॥ २ ॥

सजन संपत मिलत बहू तेरी ।

क्या तूं लाया इखत्यागिरे ॥ आत्म ॥ ३ ॥

दुःख निवारतारे जो हमको ।

उन पुरुषोकी बलिहागिरे ॥ आत्म ॥ ४ ॥

कहे हीरालाल निहाल करो निज ।

मकूतद लेना विचारीरे ॥ आत्म ॥ ५ ॥

॥ पद—मनता गुण वर्णक ॥ अंतर मल मिट्यो

नहीं मनको ॥ बहू देखी ॥

जाय लालचरी जाय बुजायो ।

देखा उर न मन निहायो ॥ पद ॥

मन न मन न मन न मन न मन

मन न मन न मन न मन न मन

शोकों मिल सला घोट्य ॥ निंदकर्की ॥ १ ॥

सुभद्राजीको कलङ्क लगायो ।

सासू ग्रही जिम चौंटी ॥ निंदकर्की ॥ २ ॥

दुर्जन का कोई दाव लगे तां ।

ज्यों वाज पाइ मांस बोटी ॥ निंदकर्की ॥ ३ ॥

निंदक मैला सबही हँला ।

जिम भरी अशुचिये कोटी ॥ निंदकर्की ॥ ४ ॥

निंदक निंदा करतही डोलें ।

जब जीमे अहार मूत्रे गेटी ॥ निंदकर्की ॥ ५ ॥

रात्री दिन लल रहे ताकता ।

जिम घुगलो ताके मन्थी मोटी ॥ निंदकर्की ॥ ६ ॥

कने हीगलाल चाल ननुमकी

एत एत ता ममल मांनि निंदकर्की ॥ ७ ॥

सत्पुरुषोंको देखकर घुरीया ॥ कल्युगमें ॥ ७ ॥

इत्यादी लक्षण कल्युगका ।

सतगुरुजी मुखे फरमाया ॥ कल्युगमें ॥ ८ ॥

कहे हीरालाल ऐसे कल्युगमें ।

जैन धर्म कल्पवृक्ष छाया ॥ कल्युगमें ॥ ९ ॥

॥ पद—जग गुण दर्शक—चेतन चेतोरे—दर्शा ॥

जग आदिगुरुतुं चेत चितानन्द तज गुमगहरे ॥ टे ॥

गई अवस्था जीवनिपाकी । आयो बुद्धापो वैरीरे ॥

कायापुगीको किलो लियो । चउदिश घेरीरे ॥ ज ॥

बेटा बेटा मुख नहीं बोलै । बुद्धो हेलो पाहैरे ॥

धर्मी त्रीपा मुख मन्त्रकोहै । जग विगाहैरे ॥ ज ॥

मार्ग दिन वैसा रहे परमें । जहि क्यो नही ॥

प्राज्ञ साधन साधन कोरे ॥ जहि कोरे ॥

मन नहीं माने म्हारी केण हो ॥
 गुरुजी हां हो जिनन्दजी ।
 किण विव राखूं यो मन वारी हो ॥ ढेर ॥१॥
 चंचल चौर तणी परे चाले ।
 मन पवन गति वेग हो ॥ गुरुजी ॥२॥
 भक्ती में भंग करे मन मेलो ।
 तो वार २ समझावूं हो ॥ गुरुजी ॥३॥
 मन तुरंग तणी परे चाले ।
 यो भटकत रहे दिनरात हो ॥ गुरुजी ॥४॥
 पुद्गल रचना या संपत परकी ।
 तो देख २ ललचावे हो ॥ गुरुजी ॥५॥
 ध्यान चुकाय डिगाइ डाल्यां ।
 मुनिवर केइ गुणवंत हो ॥ गुरुजी ॥६॥
 मेघ मुनीको मन डिगायो ।
 तो अपाद भूती घर आया हो ॥ गुरुजी ।

पाच जनामें बेठी आगे । बात बनावे ताजे ॥
 धर्म क्रियामें कपट करंतो । सुखियो मवमें बाजे ॥ फो॥२॥
 धर्म उन्नतां करवा सारु । कार्य करंतो लाजे ॥
 मृत्युक कारणव्याव वर्गगा । मान बढाइ लाजे ॥ फां॥३॥
 गर्व करी इम बोले गेहलो । बान्धू ममदर पाजे ।
 कामतणां कोइ अवसर आयां । पालो तो किम भाजे ॥ फो॥४॥
 स्वधर्मीको साज देतां । दान सुपानगियां जे ।
 हीरालाल कहै ऐसामांणसको । किम सुधर्मी काजे ॥ फो॥५॥

—

॥ गजल—मरमदी फगमान ॥ गग—कव्वाली. ॥
 सभी का प्राण पचाना । वजन किसको न करवाना ॥
 तब ज दिल बीच अहो भाइ । सभी शास्त्रके मांही ॥
 मरमदक । जो फगमानों कहां लिखानो भी बतलाना ॥
 हुक्म एज्जन्क । बोली । तोगत अजिल फगमाना ॥
 वंगत नलामन दिन्के । सभी दिन दर्द है दिन्के ॥

होन हार पदार्थ प्रगटे । तूं क्यों भूला फिरे ॥ते॥१॥

संभूम चक्री विनापाइ । रस रामसे डेरे ॥

राज लियो छे खंडको सारा । जो वैरीको दूर

करेरे ॥ तेरी ॥ २ ॥

कंस कृष्णका झगडा भारी । कैसा दाव धेरे ॥

फते हुइ सुरारीकी सारी । कंस गयो यम धेरे ॥ने॥३॥

पुफदंत बच्छ राजको डाल्यो । समुद्र जल भेरे ॥

राजा दशस्थ छलवा काजे । राक्षस होंस भेरे ॥तं॥४॥

अंतर आत्मध्यान लगायां । अपना काज सेरे ॥

कहे हीरालाल जहाज जक्तकी । आपो आप तीरेरे

॥ तेरी ॥ ५ ॥

॥ उपदेशी लावणी छोटी कडीमें ॥

यह कंचन वर्णी काय पाय नुन प्योरे ।

राय नर भवशो अवतार जन्म क्यों होरे ॥

यह जीना जिन्दगी तो यही फरज है तुमको ।
 भक्ति प्रभूकी याद करो हर दमको ॥
 यह क्रोध मान मद मोह जीतलो मनको ॥
 करो ज्ञान ध्यानका युद्ध हठादो यमको ।
 कहे हीरालाल मतपड़ो भर्म मित्रगे ॥पाय।४॥

॥ लावणी उपदेशो—यगंक्त चालमे ॥

तू क्यों करता है मान । जिन्दगी जीना ।
 तेरा चला जाय जीवन । पानीका पीना ॥४॥
 बड़े भूष कही गर्भके अन्दर लाया ।
 होगये दुनिया में जैमे बदलकी लाया ॥
 बिलका बीजली गेन मे न्यपना आया ।
 क्या लगती है देग झबक झबकाया ॥
 गवणके मुताबिक बड़े हुंवे खमीना ॥तेग॥१॥
 महारों में हांताया गग बम दस्ता

मुनि एवता आया गौचरी। कंशके महेलां मांयजी॥
 जीव जसा जब फिर गई आडी। करीकु बुद्ध बतलायजी॥
 भाइ तुम्हारा राज करत है। थे डोहलो घरन्दारजी॥
 एक मात और तात तुम्हाग। कौनलेवेकर्मवटायजी॥
 जब मुनीने ज्ञान विचारा। होतव जैसा दरशायजी॥
 पुत्र नणंदका होसी सातमां। धने देसी खूणे वेटायजी॥
 होनहारनहींमिटेकिसीका। नामप्रभूका भजलेना॥ तु. २॥
 राजा रावणकी बहिन पापनी। बुरी सीख बतलाइ है॥
 बैठ विमाने चले राजवी। सीता लेनेको आयजी॥
 करी कपट सीताको लीधी। लंकाके बागमें लायजी॥
 हनुमंत उसीकी खबर करी है। सीताको सुख पायजी॥
 रामचन्द्र लस्करले चडिया। जब रावण धवरायजी॥
 बान्ध लिया पग्वार उमका। वोभी नर्क सिधायजी॥
 ऐसा हालमालुमहुवाहै। चरित्रत्रियाकक्याकहना॥ तु. ३॥
 और सूत्रोंमें वैईका वर्णन। समझो चतुर सुजानजी॥

तस्तु सिला एक नगरीजी ।

और रहे अठणुं पुत्रजिनोको दे दी सगरीजी ॥

यह ब्राह्मी सुन्दरी पुत्री आपकी दोई ॥ महागज ॥

रही वो अकनकं वारीजी ।

इन के नहीं कर्मका भोग । जाअंजिनकी बलिहारीजी ॥

अब पुण्योदय भरतेश्वर छःखण्ड मांही ॥ महागज ॥

वैरीको किया आधिनोजी ॥ दिया ॥ १ ॥

यह चक्र रत्न नहीं आवे आपठिकाने ॥ महाराज ॥

भाईसे करी तकरारीजी ॥

देखी भरतेश्वरकी खेंच । आदम पे गये पुकारीजी ॥

यह ऋषभदेव उपदेश देइ समझाया ॥ महाराज ॥

अठणुं कागज मार्याजी ॥

गद्या बाहूवल मग्दार । वांका तखार्याजी ॥

नहीं माने आण पगवाना पगपत्रया ॥ महागज ॥

शैल्य पर हुकमज दीनोजी ॥ दिया ॥ २ ॥

रस समताको पीनोजी ॥ दियो ॥ ४ ॥
 यों कियो लोच सब सोचको अलग हटाया ॥ महागज ॥
 भस्तेश्वर मन विचारीजी ॥
 मत मानो हमारी कहन । भोगवो ऋद्धि तुमारीजी ॥
 नहीं माने बाढ़वल बात के संयम लीनो ॥ महाराज ॥
 दिलमें आयो अभिमानोजी ॥
 नहीं पढ़ें पांव लघु भ्रात । वनमें रह्या धर ध्यानोजी ॥
 हीरालाल कहे अब कगे मोक्षकी करणी ॥ महाराज ॥
 आप छे ज्ञानका भीनाजी ॥ दिया ॥ ५ ॥

॥ लावणी—बाढ़वली मुनीको बाली सुन्दरी
 सनियों का सदैवौध ॥ चाल बगेक्त ॥
 यों कहे ऋषभजिन बाली सुन्दरी दोई ॥ महागज ॥
 मुनिको जाइ नमस्साबोजी ॥
 धां लीनो संयम भार । मान तो पगे मित्रवांजी ॥ हेम ॥

प्रभूके पास सिधावोजी ॥ थां ॥ २ ॥

यह क्रोध मान जो चारों मोक्ष अटकावे॥महाराज॥

ऐसी या सीख सुनाइजी ॥

झट उतर गयो अभिमान । दिल की र्था गुमगईजी॥

अब जावूं जिनेन्द्र के पास सुनियोंको वंदू॥महागज॥

पांव जब एक उठायोजी ॥

तब ज्योति अधिक उद्योत। ज्ञान केवल प्रगटायोजी॥

यह बाहुबल केवली एम कहवाया ॥ महागज ॥

सभीमिल मङ्गल गावोजी ॥ थां ॥ ३ ॥

यह कियादेव मोहत्सव दुंदभी वाजी ॥ महाराज॥

आया समवसरणके मांहीजी ॥

श्री आदीनाथ महाराज । सभामें दिया फरमाईजी॥

यों लक्ष चउगसी पूर्व आउखो मोटो ॥ महागज॥

अटल अविचल पद पायाजी ॥

श्री रत्न चन्दजी महाराज । शिष्यको ज्ञान भणागजी

कूद पडे कन्हैया दपटी ।

गेंद लिवी नागने झपटी ॥

कहे नागनी तूं है कपटी ।

जब नागनी नाग जगावेरे ॥ क ॥ ३ ॥

जागा नाग सहश्र फण वाला ।

किया युद्ध नहीं खाया टाला ॥

नाथा नाग श्रीनंदके लाला ।

गवाल्या धै धै कने आवेरे ॥ क ॥ ४ ॥

महिया वेंचन चली है गुजरी ।

वक्त हुईथी जब बड़ी फजरी ॥

हट कर कर मटकी पकरी ।

गवालन कमरसे लचकावेरे ॥ क ॥ ५ ॥

कार लोप मत करो कन्हैया ।

मुफ्त माल मत खावो महिया ॥

संज्ञा भाग स्त्री भाग भाग भाग ।

॥ जीव जसाका एवता ऋपिसे सवाल ॥

चंदा प्रभू जगजीवन अंतर्यामी ॥ यह देशी ॥

सुनो देवरजी, संयम छोडी महेल पधारो-

महाराजीया ॥ टेर ॥

मुनिवर आया गौचरी । भोजाइ आडी फींग ॥

देवरस्युं करे मश्करी ।

ये स्वांग धरीने कांड डोलो घरोघरी ॥ सुनो ॥ १ ॥

पाय अणवाणे चालनो । उघाडे मस्तक हालनो ॥

दोष क्यांलीस टालनो ।

ऐसो कष्ट आचार क्यों पालनो ॥ सुनो ॥ २ ॥

जाया एक मातारा । अंतर नहीं कोइ बातारा ॥

क्षत्री कुल जादू जातारा ।

थांके लिख्या लेख हाथ पातरा ॥ सुनो ॥ ३ ॥

मार्गमें ऊभी गही । हाथ दोइ आडा दई ॥

आगे जावां देखू नहीं ।

गोबरमें कीटक जिम फूलेछे। तूं मानशिखम्पर डोलेछे।
 कूवा के मेंढकने तोले छे ।

अधिका से अधिका नर बोले छे ॥ सुनो ॥ ३ ॥
 यामस्तक गुंथावे जोनारी । पुत्ररत्नने जणसीया भारी ॥
 सातमो नाम होसी गिरधारी ।

खूणे घाल धने करसी दुःखयारी ॥ सुनो ॥ ४ ॥
 सुनजीवजसामनदडकानी ॥ छोडमार्गअलगीसगकानी
 प्रीतमसे पुकार करी आनी ।
 हीरालाल गावे सुनिबर बानी ॥ सुनो ॥ ५ ॥

॥ जीव जसा और कंशराजाका विचार—देसी बरोक्क ॥
 सुनो प्रितमजी ! भाइ तुम्हारा । आया हमघर गौचरी ॥
 अहो प्रितमजी ! वचन कठिन कहीने ।
 गया पाछा फिरी ॥ छे ॥
 मेंतो नो पदमे डूब डूब रही । न लेगीत बनी आइमनमही ॥

॥ छे भाइ साधूका वर्णन—लावणी चाल लंगडी ॥
 श्रीनेमीनाथभगवानपधारे।भव्यजीर्वोपेउपकारकरण ।
 भदलपुरकेवागमें । रच्योदेवता समवसरण ॥ छेर ॥
 नागसेठमातासुलसांके । छे नंदनहुवेअतिगुणवंत॥
 नलकुंवरकी औपमा । शास्त्रमें भाखी भगवंत ॥
 बाणीसुनीश्रीनेमीनाथकी।संयमलीनोधिगीमनवंत ॥
 मातापासे आयकर । पूछत मुछी हुइ मतीअंत ॥
 शेर—सेठ सेठानी इम कहे।मुझ बलम होइ इष्ट कंतजी॥
 कुल दीपक चन्द्र जैसा । प्राण जैसा अत्यंतजी ॥
 चारित्रतोअतिदोहिलो । नहींसोहिलोलगारजी॥
 कष्ट करणी सर्व वरणी । करनो उग्रह विहारजी ॥
 छूट-बहु भांत कियो उपाय कुंवर नहीं मानी ।
 जब मात पिता इम कहे लगो एक ध्यानी ॥
 मौछव कर संयम लियो प्रभू पास आनी ।
 हुवे श्री नेमीनाथके निप्य उत्तम षट प्राणी

वारह योजनकीलम्बीनगरी। नवयोजनचौडीजानी॥
 बलभद्र कृष्णकी जक्तमें। जोड़ीहै अविच्छल आनी ॥
 द्रव्यवंत दातार घणेर। जिन-भक्त सुनता वाणी ॥
 मुनिराजको क्यों नहीं। मिलियो फिगतो अन्नपाणी॥

शेर-देवकीसे मुनिवर कहे । नगरीमें बहु दातारजी॥
 तीन सिंघाडाहम आविया। षट्भाइ एकउणियारजी॥
 कोन मात कोन तात थारा। कोन नगरीको वामजी॥
 भदलपुरमें सुलसाजी । नाग शेट सुन खासजी ॥

छूट-एक एक जणेको वतीसरपरणार्ई ।

बो नार्या कंचन वरणी कमी नहीं कांई ॥

इण भांत ऋद्धि मुनिराज सर्व संभलाई ।

फिर आया नेमजी वाम आज्ञा पाई ॥

मिलत-मुनिराजका वचन सुनकर ।

गयी आश्रय अति करण । भदर ॥ ३ ॥

मुनि एवंता कल्याण सुखको । अष्टपुत्र प्रयायंति ॥

छे पुत्र सुलसाधर बधिया। सोसवजिनवरफरमाया ॥
 सोलह वर्ष नंदधर रही । अहीर कृष्ण ये कहवाया ॥
 शेर-माताके पांव लागवा। आया कृष्ण महाराजजी ।
 माताकी चिन्ता देखकर । गिरधर हुवा नागजर्जा ॥
 हाथ जोड़ी मान मोड़ी । पृष्ठियों विरतंतर्जा ॥
 माताने पुत्रके आगे । सब भाखियो अरहंतजी ॥
 द्यूट-माताकी चिन्ता भेटी सब गिरधारी ।
 हुवा भ्रात आठमां जगमें बल्लभकारी ॥
 महाराज नेमजीकी वाणी सुनी धृत धारी ।
 हीरालाल कहे गजमुनिको वंदन हमारी ॥
 मिलत-श्री जवाहरलालजी गुरु देव हमारा ।
 भवसागर तारण तिरणं ॥ भद्रल ॥ ५ ॥

पद-त्रैपदीका सत्य ॥ राजा हूं मैं कौमका ए देशी ॥
 वचन सुणी नारद तपो । पद्मनाभ भूपाल ॥

पांडव पांचो जागिया । खबर करी सब देश ॥
 कुंथाजीको भोजिया । श्रीपति जहां नरेश ॥ व ९ ॥
 पाया पत्ता नारदसे । हरी पांडव सब सिंघ ॥
 गंगा तटके ऊपरे । लड़कर जेम तरंग ॥ व १० ॥
 सुर शक्ति समुद्र तीरी । धातकी खण्ड मझार ॥
 अमरकंठा कोटा दीवी । पद्मनाभ गयो हार ॥ व ११ ॥
 द्रोपदी ले हाथे दिवी । करी दुश्मनको घाण ॥
 हीरालाल कहे जीतका । घुरिया तुर्त निशाण ॥ व १२ ॥

॥पद—कृष्ण विलाप. राग अलिया मारू मलहार ॥
 ओजी नीर लावो वीर प्यारा ।
 यातो प्यास लगी परिहारारे ॥ ठेर ॥
 कर पत्र पात्र जलके कागण ।
 पहोता मखर पारंग ॥ नीर १ ॥
 हरी पोटय ओडन पितम्बर ।

देवता आइ दिया समझाइ ।

हलधर लिया संयम भारारे ॥ नीर १० ॥

कहे हीरालाल नेमजीकी वाणी ।

मिलिया छे तंत सारारे ॥ नीर ११ ॥

॥ राम-चरित्र ॥

।सीताहरण-जटाउ ओछारा।देसीख्यालकीपटपदी॥

अमरगतपाया।पंक्षीतिरियोरेसुणी नवकारने ॥आं ॥

सिंह नादजो सांभली सरे । राम गया झट चाला॥

पाछे रावण आवियो सरे । कीधी माया जाल ॥

सीताकोलेचालियोसरे।देखी रूप रमालरे ॥अ॥१॥

निहां जटाउ पक्षीयो सरे । गहतो सीता पास ॥

भोलावण राम दे गया संग । सीताकी महशाम ॥

गैमकगलार्ग हुवा संगेदे रावणको त्रामरे॥अ॥२॥

वरज्यो तो माने नई सरे । पंत छेद दियो डार ॥

जब लिया सीताजी आप । अविग्रह धारी ॥
आवे राम लक्ष्मणकी खबर । मुझे सुख कागे ॥
जब करूंगा भोजन । पिवूंगा निर्मल वारी ॥
इम निश्चय कीधो मन । द्रवता धारी ॥
करेन वकरमंत्रका जाप । पाप हटाया उनको ॥ मेली ॥ १ ॥
यह खबर शहरमें हुई । सभी जन जानी ॥
रावण लायो पर नार । कुबुद्ध उठाणी ॥
आयो सीताजी पास । बोले यों वाणी ॥
कोन मात तात घर नार । किसे यहां आणी ॥
सीता जानी पुरुष पुण्यवंत । बोले नरइनको ॥ मेली ॥ २ ॥
जब मांड हकीगत । सभी हाल सुनाया ॥
राजा रावण छलकरके । मुझे यह सुनाया ॥
यह लंका नगरीका । ग्रह जो ऐसा आया ॥
या दश मन्त्रक रावणके । कानर कहवाया ॥
समझाकर राजा रावणको । भेजा दो बरे हमनको मेरे ॥

हाथजोड या अर्ज हमारी । मानो तो याही धरीरे ॥
 परत्रियाको पातक मोटो । डालो क्यों न परीरे ॥ पि५ ॥
 होनहार जैसी बुद्धि आवे । उपजन अंग त्वरीरे ॥
 हीरालाल कहे चंदके गह्वरकुम्भतियों आणफिरीरे ॥ पि६ ॥

॥ गवणको भभीनणकी शिखामण ॥ आमावरी गग ॥
 तेरी दरी कैसे छरे सायातो ज्ञानीयां शाखभंगे ॥ छ ॥
 पुश्कल वेलों देदेहेला । नमझायाही मरे ॥
 बंधव हमारा प्राणने प्याग । ताने पांव परे ॥ तेरी १ ॥
 जो कलु हुवा सोतो हुवा । अवही चित्त धरे ॥
 पाछली भूल चेत नगकेई । नो पण काज मरे ॥ तेरी २ ॥
 दियां परनारी दल धान धारी । घूं जानन सबके धरे ॥
 यां कृषिवाणी सुणी अगवाणी । ने कये मल परीरे ने ॥
 बुद्धमे भग प्राकम पुग । कोइमे नो हरे ॥
 अहे मलमेन नेगवल नोकी । विनिजे मल हरे ॥ ते ॥

चुप रह रही उपर सेती । मुद्रिका ताम गिरावे ॥
 देखी मुद्रिका सीता पतीकी । हर्ष हिये न समावे ॥ प ४
 चिन्ता जाणीने प्रगट हूवा । चरणे सीश नमावे ॥
 रामलक्ष्मणदोनोहैषणासुखमें । तुम क्यों अर्तिव्यावे ॥ प ५
 कहाँ लक्ष्मण कहाँ राम विगजे । कहाँ पर स्यान लहावे ॥
 सुग्रीव नृपके काज श्रुधारी । केकंदा संगमिलावे ॥ प ६
 देवो सेलाणी सांची हमको । जलदी बलतो जावे ॥
 हीरालाल कहेहोवे नरगूर । कार्य पार लगावे ॥ प ७ ॥

॥ रामजीकी जीत ॥ लावणी-वाल दूणकी ॥
 यह अतुल बलीवंत जक्तके मांही ।
 महाराज फते जंग हुवा परवानाजी ।
 सब लिया राज त्रिखण्ड आजघर रंग बधानाजी ॥ टेग
 यह राजा रावण पग्लोक हुवा पग्नार्मे ।
 महाराज राक्षस मिल भागण लागार्जी ।

महाराज केइ नृप हुवा वैरागी जी ।

श्री कुंभकरण इन्द्रजीतज मारा था बडभागीजी॥

केइ राण्या प्रमुख संयम मार्ग लीधो ।

महाराज सत्यका सत्य नहीं छोडा जी ।

कियानदीनखदावीचसंधारामुनिनेकर्मकोतोडाजी॥

यह दिया राज लंकाका भिक्षणजीको ।

महाराज अयुध्या नगरीको आनाजी ॥ सब ॥३॥

यह दिगविजय कर देश सभीको साधा ।

महाराज सोलह सहश्र देशा भूप नमायाजी ।

करीतीनखन्डमें आण अजुदया नगरीको आयाजी॥

यह उन्नीसो चौंसठके साल चौमासा ।

महाराज शहर मंदसोर के मांही जी ।

श्रीजवाहरलालजीमहाराजठाणादशरह्यासुखपाइजी॥

या जुगल लावणी जयकारणी जगमांही ।

महाराज हीरालाल कोठी मङ्गल गवानाजी॥सब॥४॥

ऊंचा पहाडझाडीजंगलमे । जहांसीताकोउतारदिया॥
कहता सारथी सुणोरी माइ । हमने खोया जन्म लिया॥

छूट-नवकार मंत्रका जाप लियाहै सरना ।

सब विघ्न विनाशे दूर सुख के करना ॥

मामाजी सीताके आय लेजाय घरम्याना ।

हुवे जुगल पुत्र गुणवान यौवनमे सोभाना॥

मिलत-संजी सवारी अबुध्या उपर

रामचंद्रसे आन भिडी ॥ धीज ॥ २ ॥

किया युद्ध हंटाया लस्कर । रामजी का नहीं हाथ चले॥

नेणभूजाफरकणसेजाणा । तजनजनकोइआंय मिले॥

इत्नेमें कोइ आयसुनावे । सीतासुत अंगजात भले ॥

छूट-लोकीक सुधारन कोज के धीज ठेरावे ।

कर उंडा कुन्ड अभिसे पूर्ण भरावे ॥

सीता स्नान कर आले वस्त्र पहर आवे ।

होवे सील सांच मुजें आंच रति नहीं आवे ॥

मिलत—जो बन्धा निकाचित आयुष्य नरकर्केमाही।
 महाराज कर्ता वोही पाय के भरताजी ॥ श्रीराम॥३॥
 यह दिया दम दिलासा मोह वश केइ ।
 महाराज कहो कछू कयो न जावे जी ।
 बडेरमनुष्य और इन्द्र जिनोको भ्रमन करावेजी ॥
 फिर रामचन्द्र महाराजको सीस नमाया ।
 महाराज इन्द्र गये आप ठिकाने जी ।
 हुवा रामऋषिश्चर सिद्ध जिनोको जंक्त में जाने जी॥
 चोपाइ—श्रीरत्नचन्द्रजी ज्ञान शिष्यायो ।
 जवाहरलालजी मुनी गुरुपायो ॥
 जिन मार्ग के सरणमें आयो ।
 हीरालाल सदा सुख चहायो ॥
 मिलत—यह उन्नीसो चौसठ साल भोपालके मांही ।
 महाराज आनंदसदा रहेहै वंरताजी॥ श्रीराम॥३॥

मिलत-जो बन्धा निकाचित आयुं प्य नरक के माही ।
 महाराज कर्ता वोही पाय के भरता जी ॥ श्रीराम ॥ ३॥
 यह दिया दम दिलासा मोह वश केइ ।
 महाराज कहो कछू कयो न जावे जी ।
 बडेश्मनुष्य और इन्द्र जिनोको भ्रमन करावे जी ॥
 फिर रामचन्द्र महाराजको सीस नमाया ।
 महाराज इन्द्र गये आप ठिकाने जी ।
 हुवा रामकृपिश्चर सिद्ध जिनोको जक्त में जाने जी ॥
 चोपाइ-श्रीरत्नचन्द्रजी ज्ञान शिष्यायो ।
 जवाहरलालजी मुनी गुरुपायो ॥
 जिन मार्ग के सगणमें आयो ।
 हागलाल मदा सुख चढायो ॥
 मिलन-यह उर्नामों चामट मान्द भोपालके मांही ।
 महाराज आनंदमदा गंहे वनार्जा ॥ श्रीराम ॥ ३॥

जो बात है न्यायीजी ॥ कियो ॥१॥

ना श्रेणिक को पकड़पीं जरै मै डाले ।

जकी करली पांतीजी ।

तन प्रमाण हुवा राजा का घातीजी ।

पतिको देखी गफलत मांझ ।

दम मिलकर आयाजी ।

१५५. रोसिंघ जो रनहीं चले चलायाजी ॥

छूट-कोणिक ७०० गादीपर आकर बैठा ।

माता के पांव पडन को गया था बैठा ॥

माताने आदर नहीं दिया रखदिल सेंढा ।

धरलियो ध्यान रानीको झुका सिर हेठा ॥

मिलत-कँवर कहे मात हमारीजी ॥ कियो ॥२॥

मैं राजलियो धाने हर्ष भाव नहीं आयो ।

महाराज राणी हकीगत सुनावेजी ।

तेने किया बाप सेवैर मुझे हित कैसे आवेजी ॥

छूट-यों केवल ज्ञान पद परमार्थ को पासी ॥
 फिर जन्म मरण रोग सोगमे कभी न आसी ।
 हीरालाल कहे गुणवंत तणा गुण गासी ।
 तास घर सदा ऋद्धि सिद्धी मङ्गल बरतासी ।
 मिलत-हवा केइ पर उपकारोजी ॥ कियो ॥ ४ ॥

॥कोणिक चेडाका युद्ध-लावणी चाल दूणकी ॥
 यह अमरपति नरपति खगपति राया
 महाराज सबी लालचको ध्याताजी
 परम शांत उपशान्त हुवा फिर मुक्तिपाताजी । छे ।
 या चंपानगरी बमे लोक धनवंता
 महागज कोणिक नृप गज कंदारी
 यह बेहल कुँवरको हकहार हाथी मोजगुदाजी ॥
 यह जलकिडा कणको नंगा जलमांही ।
 महाराज बेहल कुँवर जब जावेजी ।

महाराज सक्केन्द्र और चमर इन्द्रांजी ।
 फिर हुवा भारत भरपूर मनुष्यका वृन्द वृन्दांजी ॥
 जब चेडा महाराज दिलमें बहू घबराया ।
 महाराज जबरसे जोर न चलताजी ॥ परम ॥ ३ ॥
 जब भवनपति सुरभवनके अंदर लाया ।
 महाराज करी अणसण सुख पायाजी ।
 ले गया देवता हार, हाथी अग्निमें समायाजी ॥
 यह माया जालका झगडा जगके मांही ।
 महाराज गिणे नहीं कोई सगाइजी ।
 वाप वेद्य भाइ परिवार और सब लोग लुगाइजी ॥
 श्रीजवाहरलालजी महाराजके चरणां मांही ।
 महाराज हीरालाल ध्यान लगाताजी ॥ परम ॥ ४ ॥

॥ श्रावक वर्ण नाग नतवाकी सहाय ॥
 आऊतो दृष्टाने सांधोको नहीं रे ॥ यह देशी ॥

विनअपराधपहिलानहींहणरो।कीधोछेयहपरिमाणरो॥७
 जामतेवैरीवाणमूकियोरोलागोआणीनागजीकेसाथरे।
 रीसआणीनेधनुष्यखेंचियोरो।अवदेखतुंपुरुषोकाहाथरे
 एकहीवाणवैरीमरीगयोरोस्थलीनेछेपाछेपलटायरो॥
 संथारो कियो एकांत जायनेरे ।

चाण खेंचता आयु पूरो थायरे ॥ चेढा ॥ ९ ॥
 पहिलेस्वर्गमें जाइऊपनारो।आयूष्य पायाचारपलरे॥
 महाविदेहमांहीजन्मसीरो।मोक्षमेंजासीमेटीसलरे॥चे१०
 बालमंत्रीथोएकनागनोरोदेखादेखीराख्याशुद्धभावरे॥
 महाविदेहक्षेत्रमांहीजन्मियोरो।मोक्षजासीकर्मक्षपायरे॥
 संवत् उन्नोसो वांसडेरे । वार तिथी शुभ जोगरे ॥
 हीरालालगायोरामपुराविपेरे।सुणजोसहृश्रावकलोगरे

॥ महाशक्तकी श्रावककी सजाय ॥

हूंतो वार्गहो जिनवर नेमी ॥ यह देखी ॥

लोलुकपहिलीनकर्म । धर्मगतिकर्मकेजोरो॥आ॥८॥
 वचनलुपीनेपाछीगइ । तवधार्पाश्रीवृद्धमान ॥
 गौतमजीनेमोकल्यामुधाखाथावकजीरेष्याना॥आ॥
 मांससंधारेस्वर्गसुधर्म । चारपत्यआधुप्यरेजोग ॥
 थावकजीसुखभोगवेलुकिजालीमहाविदेहकेनोग१०
 गुरुश्रीजवाहरलालजी । ज्ञानप्यानधुपर्मदयाल ॥
 हीगलालगायोहर्षस्थं संवत्तउनीलोवांसटकेमाला॥११

॥सती चंदनचाला चरित्र ॥ लावणी—चाल इपकी ॥
 या चंपानगरी दबीवाहन नृप पूनी ।
 महाराज रुद्रने ल्यो इन्द्राजीजी ।
 हुइनहावीगीकीआनगिप्यनीमयनवहानीजी॥देवा
 यो वीमंवी नगरीको गजा चढकर आयो ।
 महाराज रुद्रके हुइ नडाइनी ।
 नव दबीवाहन नृप हा गये लड लड नचाइनी ॥

गायो संती तणो सम्बन्ध दिनोदिन आनन्दाजी॥
 श्री जवाहर लालजी महाराज धर्म दीपायो ।
 महाराज हीरालाल विघन हटानीजी ॥ हुइ ॥ ६॥

॥ वंकचूल सम्बन्ध ॥ लावणी-चाल दूणकी ॥
 यह लिया वृत्त पञ्चखाण को निर्मल पाले ।
 महाराज कष्टमें कभी नही डिगताजी ।
 गविसजायसब दूर मिले सुखसब मन गमताजी॥टेर॥
 यह वंकचूल कुँवर हुँता राजाका ।
 गज पल्लीमें जाकर बसियाजी ।
 असगदार सदा कु कर्म में बसियाजी ॥
 गी भृञ्ज मुनिश्वर आया ।
 में चौमामो कीशोत्री ।
 उपदेश मुनिजी मानज लोभो जी "
 उग हुवा, मुनिश्वर किया विहारज

गायो संती तणो सम्बन्ध दिनोदिन आनन्दाजी॥
 श्री जवाहर लालजी महाराज धर्म दीपायो ।
 महाराज हीरालाल विघन हटानीजी ॥ हुइ ॥ ६॥

॥ वंकचूल सम्बन्ध ॥ लावणी-वाल दूणकी ॥
 यह लिया घृत पञ्चखाण को निर्मल पाले ।
 महाराज कष्टमें कभी नहीं डिगताजी ।
 यावितजायसब दूर मिले सुखसब मन गमताजी॥टेर॥
 यह वंकचूल कुँवर हूँता राजाका ।
 महाराज पल्लीमें जाकर बसियाजी ।
 हुवा चोरो कासरदार सदा कु कर्म में फसियाजी ॥
 एक दिन मार्ग भूल मुनिश्वर आया ।
 महाराज पल्लीमें चौमासो कीयोजी ।
 मन देना इहाँ उपदेश मुनिजी मानज लाधो जी ॥
 शेर-चतुर्मास पूरा हुवा. मुनिश्वर किया विहारज

त्याग खन्डयां धर्महारे । यों करती है प्रकाशजी ॥
चो-श्रावक कुंवरको आइसेंठो कीधो ।

कुंवर अणसण पचखी लीधो ॥

स्वर्गवारमें पहुँतोसीधो।त्याग चारतणोफललीधोजी॥
मिलत-श्री जवाहरलालजी महाराज तणे प्रसादे ।

महाराज हीरालाल कहे सुमतिके धरताजी ॥या४॥

॥ मानतुंग मानवतीकी लावणी ॥ चाल-दूणकी ॥

यह एवन्ती देश उज्जैनी नामें नगरी ।

महाराज मानतुंग महीपाल कहवानाजो ।

त्रियाकीजालका फंद काम अन्धभोगढगानाजी॥टेर॥

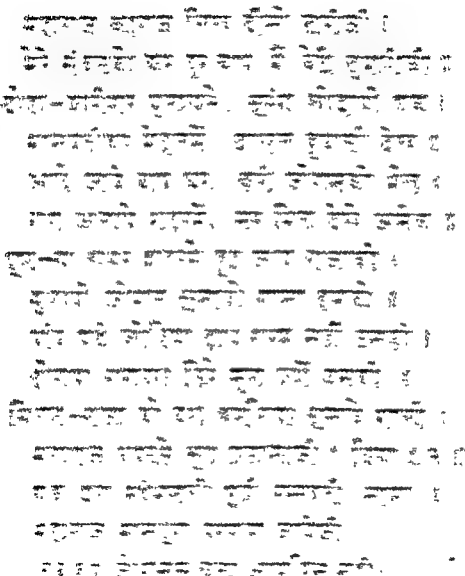
एकदिन भूप रजनीका मौका देखी ।

महाराज शहरमें फिर वो चलकेजी ।

चार चतुर कन्या मिल वानां करे हिलमिलकेजी ॥

आपाग्मां आजकी गत व्याव मन्डे कलकेजी ।

महागज मासरे वामज लेनाजी ।



महागज हरे शिव शिव लो जालीली ।

हम रामो रामेश्वर हम बनजामलो जालीली ॥

यो बरो लल मनलो लो लल लुंली ।

महागज बन्दो हरे लो जालीली ।

शेखरामेश्वर लो लल लल लल लल लल लल लल ॥

शोभा-रामो रामेश्वर लो लल लल लल लल ॥

मनलो लो लल लल लल लल लल लल लल ॥

हम राम लल लल लल लल लल लल लल ॥

महेश्वर लल लल लल लल लल लल लल ॥

हम लल लल लल लल लल लल लल लल ॥

लल लल लल लल लल लल लल लल ॥

लल लल लल लल लल लल लल लल ॥

लल लल लल लल लल लल लल लल ॥

लल लल लल लल लल लल लल लल ॥

मिलत-यह उज्जीसो पेंसठ रत्नपुगी मांठी
महागज-हीयलाल आनन्दे मायाजी ॥ जिदाः५५॥

॥ एलपी पुप बलि ॥ नारणी-वाल-हृदयी ॥
या पूर जन्मभी भीति भीति या देखो ।
महागज मोर कर्म नांग रत्नासोनी ।
पनदस मेराओ पुन नरदोको देख ललदासोनी ॥
इन बरु मेरुनी पुनयो मो सम्झावे ।
नारायण श्रीर कथासुं नारीनी ।
नय नारी नरके मंग भानलो हरी रत्नासोनी ॥
यह भोज वहुत मरी केने मेरु वरी दानी ।
महागज मोर नर नरके आनंदोनी ।
हुन पुनीको रत्नास पुन मोर नर नारीनी ॥
लस मोर नर नर मोर ललदासोनी ।
नृनायक विरा मारी विमान ॥ मोर नरदनी ॥

महाराज त्रियासे जग भरमायाजी ॥धनदल॥३॥

एक सुनिराज महाराज गौपरी आया ।

महाराज नट्यो नजरत पहिषाजी ।

धन्यदलुनि संसार त्याग फिर पार उत्तरियाजी ॥

पौ भाई भादनां बमोका दुन्द उहाया ।

महाराज जान बेरल पद सायाजी ।

बह राजादिक नब लोका जान सुन पणा सुलखायाजी ॥

सी मनपन्थी महाराज विश्वदिता ।

महाराज लदाहम्यलजी पदायनाजी ।

पौ सी भाग धरो बलपन नरे सुनयेन जनसाजी ॥

पह उर्जासी बेमर नमदके नोरी ।

महाराज विगमल पह एक सायाजी ॥धनदल॥

१. १९५०० २. १९५०० ३. १९५००

४. १९५०० ५. १९५०० ६. १९५०० ७. १९५०० ८. १९५००

कर्मभयताये जगभयताजिमोभाहोभासकोरहना ५
 मुण्डवदेसमयजगद्भारिभातपिनावेमंगमैलेजो ॥ ५ ॥
 कोहोगलाहसयमहाहृषयो । साचोमंगमिलोतुष
 जेहना ॥ यामय ७ ५ ॥

॥ सुदर्शनकोश । सरस्वतीविद्यायां जगत्कार्यो-पदेशो ॥
 श्रीमन्महोदय । संसार जगदो गहरी मर्यादा । जग
 ह्येते दो एक सरस आर । जो नाने जगत् कारने
 मे नारी जगदा दीजो । जगत् नारी मर्यादा । संसार ॥
 संसार सरस्वती जगत् नारी । जो नाने जगत् कारने ॥
 रामकर्मलक्षणविन्दो । जगत् नारी जगत् नारी ॥
 मर्यादा मर्यादा सरस्वती । जो नाने जगत् कारने ॥
 जगत् नारी जगत् नारी । जो नाने जगत् कारने ॥
 मर्यादा मर्यादा सरस्वती । जो नाने जगत् कारने ॥
 जगत् नारी जगत् नारी । जो नाने जगत् कारने ॥

॥ अधरवरणोवा सर्वेया ३९ ॥

अग्निहोत्र ध्यानधर ज्ञानदा उद्योत कर ।

संतार सागर सा ऐसीकरो वरनी ॥

गुरोद परण दिन रविसे हरण नित ।

साधन मरग गति दर गीत हानी ॥

दानदया साज सौल दुर्गातिको दूर डेल ।

सुरत्यको सलनेलकट दुन्दुव हानी ॥

अंतःकरण मेरी शिष्टिको नहि हानी ।

हीनतात करे भित्त नरको निमानी ॥ १ ॥

मुनीको सज्ज ना सुनको भित्त धा ।

जावनको हू कर सक दिन नारी ॥

विनीसे सुखद नहि विनीसे सुखद को ।

नारीको सज्ज ना निज सुख नारी ॥

नारीको सज्ज ना निज सुख नारी ॥

नारीको सज्ज ना निज सुख नारी ॥

अहोनिश तरण लेत योगसी घयई है ॥
 ऐसा है दयाल दाता करि है अनंत माता ।
 हीमलाल कहे ज्ञाना गुरु गण गारि है ॥४॥
 देखो इस जगन्मो मुठरी रची है लाल ।
 सांभसे न चाले चाल जगत संसारि है ॥
 मूढा जो बलेंक देत निवकहे त्याज रहित ।
 दुष्टसेली करे हेत नरक अधिकायि है ॥
 सांभसे न जाई लीज संत काहा गे मय ।
 मन मरियो बौद्ध बग्न जगारी है ॥
 सुमुख सुभाष नः सुलहि लाल कः
 हीमलाल कहे मलक मुन्य बाहि है ॥५॥

दक्षिमे तयंभू रमण रय बहे गोलंकर ।

परावन पुंजयमे अष्टर उष्टिये ॥ १ ॥

शोरदामे निम सुगे नगानांहे पयसीदोहे ।

सोरन शेला माली वष्टुदेर सगुदे ॥

कल माले मल लोम मभाने सुभसी जोग ।

निशिनं ललपदीनी उम मल्लसिखमलं दे ॥

मंगाने विमलसिख शानाने मल्लमं लोम ।

कलमिखम सुदेनमे अति मल्लसिखम ॥

मंगल शानमल्लम सुभमे मल्लम मल्ल

मल्लम मल्लम मल्लम मल्लम मल्लम मल्लम

मल्लम मल्लम मल्लम मल्लम मल्लम मल्लम

वरनकुल सिरकुल दुल्लहि तिलहि सुख ।
 हीगलाल कहे श्रील गिन नानी नानी है ॥२॥
 बस्तर जोरण अंग नही जाने रूप रंग ।
 नासनेन नमजाहे मल्लसेन तार है ॥
 गेलाणो नही है जेन जादास्य कहे लोग ।
 लाज काज लिसा पैठ रहे दल्लस है ।
 अकदही दिना दल्लस नही जे है नेव ।
 बार धनु दल्लस नही भोग है ।
 सीतने सीतलान दल्लसो लीदल्लस ।
 हीगलाल कहे लंदल्लस निर्मल मल है ॥३॥

अल्लस दल्लस लल्लस लल्लस लल्लस ॥

लल्लस लल्लस लल्लस लल्लस लल्लस है ॥

लल्लस लल्लस लल्लस लल्लस लल्लस ॥

लल्लस लल्लस लल्लस लल्लस लल्लस है ॥

लल्लस लल्लस लल्लस लल्लस लल्लस ॥

धन माल लेह कर घोर चाला निज घर ।

रहे हीमलाल सोतो गया धनी दूर ॥

जायुं २ घरयो घोर नाह लेह गयो ।

एसो जाय घनो पायो कामे रहे धूम ॥ ८ ॥

मैं तो घनो उपदेश दियो पनी कते न्ये ।

धने तो न लागे धात करमाही मनई ॥

धर्मही जाय नीत जगही बनात मीत ।

पैतो सब बात करी नांसी २ सब है ।

एसो जो न जान जाई मनमेंही नही मर ।

हीमलाल दोर नारी धरि धरि मर है ॥

जैन बुद्ध सब होखी मेका नामे नामे मरै

मरै मर मैरी जाह धरि धरि मर है ॥ ९ ॥

मनम मनम इह काह न जाय धरि

मनमें नर बुना जाह नर काह है ॥

॥ सर्वेया २१ ॥

आदिष्टमें वीररत्न दान दिया होवे जन ।
 तपस्या करियां सुकल करे कोर तनयो ॥
 निश्चय धर्म धीर होवे महा सुवीर ।
 राज पद त्याग गत धोरजेके जनको ॥
 काम क्रोध मोह भीत गह्र मोच लिया जीत ।
 बेरियो विनासे कहां धोर वीर मनको ॥
 दीगलाल कहे महा वीर निह नाम सह ।
 धनिक धरम क्षय कोषान्तराचनरो ॥ १ ॥
 बीलो हे श्रेष्ठ गग लज्जामे होतरह ।
 बिलोय बिलोय नीला गति सुख जालिये ॥
 कांस्य मोत्याको हार नरा = निम्नतर ।
 लज्जम लज्जम गूढ गंधादिह जालिये ॥
 मित्र = लज्जम लज्जम लज्जम लज्जम लज्जम ।
 लज्जम लज्जम लज्जम लज्जम लज्जम लज्जम ।

गुरु जन विद्या संग गुरु अविचार है ॥
 रीगलाल करे ऐसे मधि मज्जा मन्तो ।
 लावैरी यन्म घाती होय जेजेकर है ॥ १ ॥
 विरहा ते लज्जा रह संजामे उपत भयो ।
 गने कोर जाण लियो मम कान कर्मियो ॥
 मयम संजोग समे मधिरवो बल होत ।
 विद्या भार बरे बाजु लागे तेह धर्मियो ॥
 कदा लज्जा लज्जा हो रोसाको मयाको करे ।
 लोभिक को लज्जा तेह लज्जाकरा हरियो ।
 रीगलाल करे न लज्जाको लज्जा नरे ।
 मुनी लज्जा लज्जाको मज्जाको लज्जा ॥ २ ॥
 विनयको न लज्जाको लज्जाको लज्जा ।
 लज्जाको लज्जा लज्जाको लज्जा लज्जा है ।
 लज्जाको लज्जा लज्जाको लज्जा लज्जा ।
 लज्जाको लज्जा लज्जाको लज्जा लज्जा ।

धन जो बेरागीजन जानलियो एहवो तन ।
 धरियो बेरागे मन जिम जल नावहै ॥
 संजमको सारजो संसारको उतारे पार ।
 हीरालाल कहे योही तीरणको दावहै ॥ ६ ॥
 हाँसरस उपजत हाँसकी वस्तुको देख्या ।
 विप्रीत वचन सुण्या आवे हाँसरसहै ॥
 पुरुष स्त्रीनो रूप बालब्रध तरुणीको ।
 अन्यदेस भाखालिंगे दडहड हाँसहै ॥
 सुता देवरके मुख मोभाइ मंढण कियो ।
 जाग्रत भयासे नार हीहीकार हिंस है ॥
 इमहे अनेक उदारण हाँसरस काज ।
 हीरालाल कहे मुनी मोन भाव बस है ॥ ७ ॥
 कलुणिरसकी उत्पत्ती है वियोग संग ।
 नार भग्नार पुत्रादिक व्याधि वयाणा ॥
 शत्रुभय मन जार्णी मकल्य विकल्य आनी ।

आक्रंदादि शब्दनीर झरे जेके नयणा ॥
 जिम कोई नारके भरतारको वियोग भयो ।
 अन्यके आगल मांड कहे निज दहेणा ॥
 हीरालाल कहे सुख भोग हे संतोष जोग ।
 जैनधर्म पाया रोग मिटे करो जयणा ॥ ८ ॥
 क्रोधादिक उपशांत होत है प्रशांतरस ।
 विषय कषाय हिंसा दोषसे नीव्रतियां ॥
 कोइक पुरुष मुनीराजको देखीने कहे ।
 सोमद्रष्टी निर्विकार सोवे साधु जतियां ॥
 शशी जूं सीतल मुख उपसम रस युक्त ।
 इम गुण करी जुक्त साधु वा कोइ सतीयां ॥
 हीरालाल इम कहे अनुयोग द्वार लहे ।
 ताकोही आधार नाम कथनामे कथीया ॥ ९ ॥

जयसेन^{३३} हरीसेन^{३४} जयपेण^{३५} लाइये ॥

जगमाल^{३६} देवरिख^{३७} भीमरिख^{३८} कर्मरिख^{३९} ।

राजरिख^{४०} देवसेन^{४१} संकरसेन^{४२} धाईये ॥

लक्ष्मिलाम^{४३} रामरिख^{४४} पद्मसुरी^{४५} पेटालीस ।

हरीसेन^{४६} कूसलदत्त^{४७} उवाणिरिख^{४८} ठाईये ॥ २ ॥

जयसेण^{४९} विजेरिख^{५०} देवसेन^{५१} सुरसेन^{५२} ।

महासुरसेन^{५३} स्वामी^{५४} महासेन^{५५} धारी है ॥

जयराज^{५६} गजसेन^{५७} मीश्रसेन^{५८} विजेसिंह ।

शिवराज^{५९} लालजीने^{६०} ज्ञानजीरिख^{६१} भारी है ॥

भाणोजी^{६२} रूपजीरिख^{६३} विजेराज^{६४} तेजरिख^{६५} ।

कुवरजी^{६६} स्वामीके^{६७} पीछे^{६८} हरिजी^{६९} विचारी है ॥

॥ चारा भावनाका वर्णव ॥ सर्वैया ३१ ॥

^१अनित्य ^२असरण ^३संसारने ^४एकंतभाव ।

^५पंखि पत ^६पंचमिया ^७भावोनित्य ^८भावना ॥

^९अशुचिने ^{१०}आश्रव ^{११}संवर ^{१२}निर्जरा जाण ।

^{१३}धर्म ^{१४}भावना ^{१५}चित ^{१६}धरमको ^{१७}लावना ॥

^{१८}लोगा ^{१९}लोग ^{२०}एकदश ^{२१}बोध ^{२२}दुहा ^{२३}द्वादश ।

^{२४}जनम ^{२५}मरण ^{२६}माहीं ^{२७}फेर ^{२८}नही ^{२९}आवना ॥

^{३०}हीरालाल ^{३१}कहे ^{३२}भव्य ^{३३}भावरे ^{३४}भावना ^{३५}नित ।

^{३६}कर्म ^{३७}खपाइ ^{३८}हित ^{३९}मुगतिको ^{४०}पावना ॥ १ ॥

^{४१}सुनोहो ^{४२}चतुर ^{४३}नर ^{४४}दुवादश ^{४५}चित ^{४६}धर ।

^{४७}भाखी ^{४८}श्री ^{४९}जिनवर ^{५०}ताकी ^{५१}एह ^{५२}रीत ^{५३}है ॥

^{५४}प्रथम ^{५५}अनित्य ^{५६}तन ^{५७}धनने ^{५८}जोवन ^{५९}पन ।

^{६०}कारमो ^{६१}कुटुम्ब ^{६२}किम ^{६३}कीजे ^{६४}तहां ^{६५}प्रिन ^{६६}है ॥

ऊंच नीच भयो जैसो चपलाको चलको ॥
 बाप मरि पुत्र भयो पुत्रको पुत्र धयो ।
 उल्ट पुल्ट जैसो नाटकको खलको ॥
 हीरालाल कहे लीनो संजमसु शालिभद्र ।
 घुस्त त्यागन कियो नासिकासो मलको ॥ ४ ॥
 एकंतभावना एका एकीहैं चेतन मेरो ।
 कोइ नहीं तेरो देख ज्ञान चित धरणी ॥
 जावताहि एकाएकी जावत है एकाएकी ।
 जागम गमन सो तो कर्माको करना ॥
 जापही संचित कर्म भोगत है जापो जारी ।
 सुख दुःख निजकृत जापको वधरणो ॥
 कहे हीरालाल नमिगज भये अरिगज ।
 एकंत विगजीकाज संजमको मरणो ॥ ५ ॥
 जैसे निरा बानकाज पंखि तरु ग्या गज ।
 तेसो परिवार भिन्दो जहिपहु भान है ॥

आवत करम संच जासे भारी होत है ॥
 मिथ्यात्व अव्रत प्रमादने कषाय करी ।
 अशुभ अधवसाय करमाको सोत है ॥
 हिंसाझूठ आदि विस बोल कहा आश्रव ।
 ताको जो परहरे कर्म मल्लधोत है ॥
 कहे हीरालाल ऐसी समुद्रपाल महा ऋषि ।
 भाइ हे भावना जैसी पाया धर्म जोत है ॥ ८ ॥
 समकित आदि बीस बोलको सुलट किया ।
 संवर कोठाम जीयां कर्मकोन्याव है ॥
 रोकदियो आश्रव संमर भावना कर ।
 पाप सब परहर संबुडा केवावे है ॥
 जैसे नीरनाव माहीं रोकदियो आवेताही ।
 जैसे वासुदैव दल अरिको नसावे है ॥
 हीरालाल कहे केशि मुनि बंधा सुख लहे ।

आलोइ निंदीयकर गयां खेवापार है ॥

पैतीस वर्ष लग पांल्यो है संजम भार ।

बहोतर वर्ष सब आयुष्य विचार है ॥

कहे हिरालाल घणों कियो उपगार जाण ।

शिष्यको भणायो ज्ञान ध्यानका भंडार है ॥ २ ॥

॥ उपदेशी छप्पय छंद ॥

कियो रूप नरसिंह, द्वारके मुले आयो ।

महितल मारी लात, नादे अंमर गजायो ॥

धरणी भइ धडधडाट, थरहर धूजण लागी ।

गढमढ मंदिर कोट, घडढड पडिया भागी ॥

देख अतुल्य बल खलबल्यो, मन विचार इमडो कियो ॥

हीरालाल कहे नृपपद्मने, सरण सतिको जाय नियो ॥ १ ॥

फिरे नंदीको पुर, फिरे सुरो रण चडियो ।

फिरे मेघ पहल, फिरे गजमदको जडियो ॥

हीरालाल कहे रस वचनको, बुद्धिवंत नर पीजिये.४
 अधिक मात ओर तात, अधिक सुत नार स्नेही ।
 अधिक बंधु परिवार, अधिक सजन जन केही ॥
 अधिक राजको ठाट, पाट पितांमवर गहना ।
 अधिक माल रसाल, अधिक मुख अमृत वयना ॥
 अधिक पद भूपत भयो, अधिक रूप रमणी गणो ।
 हीरालाल कहे इस जन्ममें, अधिक धर्म जिनवर तणो.५
 अधिक ज्ञान गुण ध्यान, अधिक तप संजम सूर ।
 अधिक सील संतोष, अधिक शत्रु मूर ॥
 अधिक दया उपदेश, अधिक मुख अमृत वाणी ।
 अधिक कियो उपकार, अधिक जीव यतना जाणी ॥
 अधिक धिरज धरणी धरा, अधिक तेज दिवाकर जसो ।
 हीरालाल कहे मुनीगजको, अधिक शीतल चंदा असो ६
 ॥ इति संपूर्णम् ॥

कर्म कर्म के लिये
 तेरे प्रिये लिये । तेरे लिये
 तेरे लिये तेरे लिये
 तेरे लिये तेरे लिये ।
 तेरे लिये तेरे लिये
 तेरे लिये तेरे लिये । तेरे लिये । २१
 'कर्म' तेरे लिये कर्म
 तेरे लिये तेरे लिये
 तेरे लिये तेरे लिये
 तेरे लिये तेरे लिये । तेरे लिये । २२

१. कर्म कर्म कर्म ।

कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म
 भला क्या क्या कर्म कर्म कर्म । कर्म कर्म
 देशदेश के धर्मिक भाव । कर्म कर्म कर्म कर्म

भला; उनका ॥ कान्फ़ेंस ॥ १ ॥

प्रातिक प्रांतिक भेज उपदेशक। जयविजय करावती
हे रे ॥ भला; जय ॥ कान्फ़ेंस ॥ २ ॥

कृक गिवाज आज तक केद। उनको दूर दृगवती हे रे ॥

भला; उनको ॥ कान्फ़ेंस ॥ ३ ॥

मपनीकग्नीविपनीकीहग्नीधमीकोराजदिलावती हे रे

भला, धर्मी ॥ कान्फ़ेंस ॥ ४ ॥

जीव दयाका यबंध स्वावन। सय संघसे भक्ति

बदावती हे रे ॥ भला सय कान्फ़ेंस ॥ ५ ॥

कान्फ़ेंस कानून यतावत। लोकिक सुवार कगावती हे रे

भला, लोकिक ॥ कान्फ़ेंस ॥ ६ ॥

पुण्य श्री लालजी गुरु जवाहर लालजी, 'हीरा' लाल

हुमनी पुगावती हे रे ॥ भला हीरा लाल ॥ कान्फ़ेंस ॥ ७ ॥

॥ इति श्री जैन सुशेष स्नावली समाप्तम् ॥

10-22511512

21511512

S. Kopkegi: yadaliwadi.

Wolter Bauer

Rajkot-

॥ श्री ॥

छत्रीश बोल संग्रह

अने श्रमिकाने, अग्रगण्य उपयोगी जाणीवोतने स्वचे गणीज रीते संशोधन
(क्षीम) आग्रह; सारु तैयार कृती छपायी प्रसिद्ध करतार,

द प्रेरुदान शेठिया. मुं. विकानेर.

१०००.

मंजूर १९९२ मने १२.१६

५७

21505121.5

५१५१०५२

2

U Gopalji yadav
Bhat Bazar
Rajkot

Blatt Beyer
Rajkoti

Rajkoti

“ 哉 ”

॥ छत्रीश बोल संग्रह ॥

Index No. 7000

संग्रह

संग्रहणी, आनक अने आविस्त्राने, अन्वय उपयोगी ज्ञाणीपाताने स्वर्गे पणीज रीने संशोधन
 रूग्णी पणन (वक्षीम) आवय. साक नेवार कमी छपाची प्रसिद्ध करनार,

अगरचंद नेरुनान शेरीया.

पुण्यपर्वण-मन १९०९

अगरचंद नेस्लान शैबिया.

मु. विकानेर.

किम्मत समुपयोग (अमूल्य)

100

Solihia Jain Library
BIKANER
Serial no. 22
Index no. 740

REDACTED

“ 哉 ”

॥ छत्रीश बोल संगत ॥

આવડેલા ગામડાંની, માળખાંની, આપક અને આપિલાનું, અવકાશ અને આપકની નોંધીયાતોને સર્વે પરીપત્ર અને પાંચોત્રના પાત્રમાંથી પાકાત (પરીપત્ર) આપક માળખાં, આપક અને આપી અગિયાર દરબાર, અગરસંદ, નેરબાન ડોનીયા, અને પાંચોત્રના પાત્રના

गु. विक्रान्त.

किमान गन्तव्येण (अगुल्ल.)

Sothia Jain Library
Bikaner
Serial No. 242
Index No. 242

THEIR RECORDS

॥ श्री ॥

॥ छत्रीश बोल संग्रह ॥

जो, मधुबनी, आनंद और आनंद, अथवा अथवा गोपीयाजी से गीत से संग्रहित
करावी पकल (गीत) आनंद आनंद करी अथवा प्रसिद्ध कराना,
अथवा चंद नेरुदान डीनीया.

पुस्तकालय-१९००

मु. विकानेर.

मंगल १९०० मंगल १९००

किशन मधुबनी (भूमध्य.)

Gothia Jain Library
Bikaner
Serial No. ६६
Index No. १०००

RESEARCHS IN INDIAN LITERATURE
BIRLA LIBRARY

Sethia Jain Library
BIKANER
Serial No. ६६५
Index No. ७२५

॥ श्री ॥

॥ छत्रीश बोल संग्रह ॥

संग्रह माधुजी, माधवजी, आचरू अने आचिमने, अचटप उष्योणी जोणीपावने मने नगीन गीते संग्रह
कराजी मकत (वधीय) आचरू सारू तैयार करी उपाजी मणिकरू करनार,
खगरचंद जेरुदान शेरीया.

प्रमाणपत्र-मन १९०७

मु. विकानेर.

किम्मत सदुपयोग (अमूल्य.)
मंकन १९१० मने १९१६

RECORDED & INDEXED
JAN 1910
SETHIA

21-11-2019

21-11-2019

21-11-2019

21-11-2019

21-11-2019

21.05.2011

विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय, दिल्ली

ब्लॉक वेबसाइट

परिचय

॥ श्री ॥

॥ छत्रीश बोल संग्रह ॥

समस्त साधुजी, साध्वीजी, श्रावक अने श्राविकांचे, अवश्य उपयोगी ज्ञोषीपत्रांचे सर्वे गणीत रीति संगोपन करवनी महत्त (वक्षीय) आवण। साक नैवार करी ज्ञपची प्रसिद्ध करणार,

द्वयगरचंद जेख्दान शेठिया. मु. विकानेर.

प्रथमावृत्ति-या १९९९.

मंस १९९३ मंस १९९४

हिम्मत मनुष्ययोग (प्रमूख्य.)

Sethia Jain Library

BIKANER

Serial No. ६६५

Index No. ७७७

RECEIVED BY THE LIBRARY

21.11.1950

21.11.1950

21.11.1950

21.11.1950

21.11.1950

